22

वृत्ति परिचय

संस्कृत साहित्य में वृत्ति शब्द बहुत से शास्त्रों में देखा जाता है परन्तु शास्त्र के भेद होने पर वृत्ति शब्द का अर्थ भेद हो जाता है। जैसे 'पराथभिधनं वृत्तिः' यह व्याकरण शास्त्र में प्रसिद्ध है। साहित्यशास्त्र में तो अर्थबोध के प्रति अनुकूल कोई व्यापार वृत्ति नाम से सुविख्यात है। वेद वेदान्तादि शास्त्रों में जो शास्त्र वाक्य होता है, वह शास्त्र वाक्य साक्षात् शास्त्रार्थ को प्रतिपाद्य करता है। साहित्यशास्त्र में प्रायः साक्षात् अर्थ का प्रतिपादन कभी नहीं होता। वहाँ तो लक्षणावृत्ति या व्यञ्जना वृत्ति का प्रयोग होता है। जैसे:– 'भवतः क्व गृहम्' – आपका घर कहाँ है इस प्रश्न का उत्तरकर्ता तो ग्राम के शीतत्व पावनत्व आदि धर्म का कथन करने के लिए गगायां घोषः यह उत्तर देता है। अर्थात् साक्षात् उत्तर न देकर लक्षणावृत्ति से उत्तर देता है। इसी प्रकार 'सन्ध्यावदनं कुरू यह साक्षात्, माता पुत्र को नहीं कहती है अपितु गतोऽस्तमर्कः' इस कथन से व्यंजना वृत्ति से 'संध्यावन्दनं कुरू' यह अर्थ बोध होता है। काव्यादि में लक्षणावृत्ति और व्यंजनावृत्ति का प्रयोग बहुत अधिक देखा जाता है। मूल अर्थ गुप्तरूप से विद्यमान रहता है। इस कारण से ही चमत्कार दिखाई देता है। शुरू में कोई वाक्य सुना जाता है। उसके बाद अभिधावृत्ति से शब्द के संकेतित धर्म स्मरण होता है। उसके बाद तात्पर्यवृत्ति से परस्पर पदार्थो का अन्वय बोध होता है। शब्दों के संकेतित अर्थ स्मरण के बाद कुछ बोध होता है। तब लक्षणावृत्ति का आश्रय लेते हैं। जैसे 'गंगायाम् घोषः' इसके जलप्रवाह में ग्राम की स्थिति असंभव होने से लक्षणावृत्ति से गंगा शब्द का गंगा तीर यह अर्थ प्रतिपाद्य होता है अर्थात् गंगा के किनारे घर है।

इसी प्रकार 'गतोऽस्तमर्कः' यहाँ 'सूर्य अस्त हो गया' इस अर्थ में तात्पर्य नहीं है। अतःएव व्यंजना वृत्ति से सन्ध्यावंदन करो यह अर्थ प्रतिपाद्य होता है। तात्पर्यवृत्ति से शब्दों का

अन्वयमुख होने से शब्द बोध प्रतिपाद्य होता है। इस पाठ में वृत्ति चतुर्य का संक्षेप अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- वृत्तियों के लक्षणादि जान पाने में;
- शब्दबोध प्रक्रिया को जानने योग्य हो पाने में;
- लक्षणावृत्ति को समझ पाने में;
- लक्षणावृत्ति को प्रयोग कर पाने में;
- कहाँ लक्षणा प्रवृत होती है, यह जान पाने में;
- वाक्य में स्वयं लक्षणा का प्रयोग कर पाने में;
- लक्षणा के प्रयोजन को समझ पाने में;
- व्यंजना वृत्ति को जान पाने में;
- व्यंजना वृत्ति से प्रतिपादित अर्थ को जानने में पारंगत हो पाने में;
- व्यंजना वृत्ति से व्यवहार कर पाने में;
- तात्पर्यवृत्ति के अर्थ व स्वरूप को समझ पाने में;
- कहाँ अभिधा से वाक्यार्थबोध नहीं होता, ऐसा जान पाने में और;
- तात्पर्यवृत्ति का प्रयोजन जान पाने में;

22.1 वृत्ति का लक्षण

शब्द श्रवण जन्यार्थ बोध के प्रति शब्द ही कारण है। कारण के होने पर कार्य संभव है। यहाँ भी अर्थबोध के प्रति अनुकूल कोई व्यापार होता है। आचार्यों के मत में इस व्यापार को ही वृत्ति कहते हैं। अर्थात् शब्द ही कारण है उस कारण के प्रति व्यापार ही वृत्ति कहते हैं। साहित्यशास्त्र में वृत्ति शब्द पारिभाषिक है। यहाँ शक्ति ही वृत्ति है।

22.2 वृत्ति के प्रकार भेद

वृत्ति प्रधानता अभिधा, लक्षणा व व्यञ्जना भेद से तीन प्रकार की है। कुछ लोग तात्पर्य को भी वृत्ति का भेद स्वीकार करते हैं। अत: वृत्ति चार प्रकार की है - अभिधा,

लक्षणा व्यंजना और तात्पर्य। वृत्ति के प्रकार में पण्डितों में मत भिन्नता दिखाई देती है।

कुछ आचार्य कहते हैं कि अभिधावृत्ति से ही सभी अर्थ प्रतिपादित होते हैं। अत: लक्षणादि वृत्ति स्वीकार करने का कोई प्रयोजन नहीं है। जैसे मुकुलभट्ट ने अपने 'अभिधवृत्तिमातृका' ग्रन्थ में कहा कि जो लक्षणा है वह अभिधा के अन्तर्गत ही है।

महिमभट्ट ने शब्द की एक ही अभिधावृत्ति स्वीकार की है। उनके मत में जहाँ अभिधा के बिना ही अर्थबोध होता है। वहां अनुमिति की सहायता ही होता है। अर्थात् लक्ष्यार्थ तो अनुमिति गम्य है। अपने ग्रन्थ व्यक्तिविवेक में लक्षणा को पृथक अस्तित्व स्वीकार नहीं किया।

आचार्य नागेशभट्ट ने अपने परमलघुमंजूषा नामक ग्रन्थ में पृथकरूप से लक्षणा एवं व्यंजना वृत्ति स्वीकार की है फिर भी अभिधवृत्ति जैसी लक्षणावृत्ति एकशक्ति के प्रकार भेद से उल्लेख किया।

इस प्रसंग में नैयायिकों का मत भी महत्त्वपूर्ण है। वे भी अभिधा और लक्षणावृत्ति को स्वीकार करते हैं। उनके मत मे व्यंजना वृत्ति को स्वीकार करने का कोई प्रयोजन नहीं है। नैयायिकों ने व्यंजनावृत्ति को खण्डित करने के लिए विविध ग्रन्थों एवं टीकाओं की रचना की। उनमें महिमभटट् विरचित व्यक्तिविवेक तथा माधवतर्कसिद्धान्तविरचित शक्तिवाद की टीका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आचार्य जयन्तभट्ट ने भी न्यायमंजरी ग्रन्थ में व्यंजना वृत्ति का खण्डन करने का प्रयत्न किया है। क्योंकि वैशेषिक दर्शन को न्यायदर्शन के अंगरूप में गिना जाता है। अत: बहुत से वैशेषिक दार्शनिक भी व्यञ्जना वृत्ति को अस्वीकार कर इस मत का पोषण करते हैं। मीमांसक भी व्यंजना वृत्ति स्वीकार नहीं करते हैं। उनके मत में अभिधा और लक्षणा के अतिरिक्त जो अर्थ प्राप्त होता है। वह तो अर्थापत्ति प्रमाण से ही होता है। किन्तु परवर्ती काल में कोई भी अर्थापत्ति को वृतिरूप से स्वीकार नहीं करते हैं। वस्तुत: अर्थापत्ति प्रमाण को न्यायसम्मत में अनुमानवत् ही तुलनीय हैं।

किन्तु दूसरे वैयाकरणों के साथ अन्य आलंकारिक भी व्यंजना वृत्ति की प्रयोजनीयता को स्वीकार किया। इस प्रसंग में नागेशभट्ट ने लघुमंजूषा में कहा– वे वृत्तियाँ तीन प्रकार की है– शक्ति लक्षणा और व्यंजना। मुख्यार्थ बाधित हो या न हो, मुख्यार्थ के साथ संबंध हो या ना हो मुख्यार्थ प्रसिद्ध हो या अप्रसिद्ध हो, वाच्यार्थ के व्यतिरिक्त जो अर्थ उपलब्ध होता है, उसका उद्‌बोधक संस्कार विशेष ही व्यंञ्जना है। आचार्य आनन्दवर्धन ने ही पहली बार व्यंजना वृत्ति के ऊपर महत्व देकर ध्वनिप्रस्थान की प्रतिष्ठा करने के लिए ध्वन्यालोक की रचना की। इसके टीकाकार अभिनवगुप्त भी इस वृत्ति को स्वीकार करते हैं। अभिधा लक्षणा और तात्पर्य के साथ व्यंजना भी स्वीकार करते हैं।

व्यंजनावृत्ति के विषय में मम्मट का मत भी उल्लेखनीय है– कुछ आचार्य मानते हैं कि अभिधा लक्षणा व्यंजना वृत्ति के अतिरिक्त तात्पर्य नामक वृत्ति भी वाक्यार्थ प्रतिपादन में सहायक होती है। किन्तु आलंकारिक कहते हैं कि यद्यपि तात्पर्यवृत्ति वाक्यार्थ निर्णय

में सहायता करती है, यह वृत्ति नहीं है। पुनः कुछ के मत में वक्ता की इच्छा ही तात्पर्यवृत्ति है। जैसा कि भाषा परिच्छेद में कहा है- वक्तुरिच्छा तु तात्पर्य परिकीर्तितम्। अन्यों के मत में ईश्वरेच्छा ही तात्पर्यवृत्ति है। इस प्रसंग में यह कर सकते हैं कि नवीन नैयायिकों के ग्रन्थों में तात्पर्यवृत्ति का अलग से उल्लेख नहीं है। वैयाकरणों का मत भी नैयायिकों के मत के समान है। वेदान्ती भी तात्पर्य को पृथकता से स्वीकार नहीं करते हैं।

किन्तु कुछ आलंकारिक आचार्य ऐसे भी है जो तात्पर्यवृत्ति को महत्वपूर्ण वृत्ति के रूप से स्वीकार करते हैं। आचार्य धनिक ने अपने 'काव्यनिर्णय' ग्रन्थ में कहा है- 'यावत्कार्य प्रसारित्वात् तात्पर्यं न तुलाधृतम्' अर्थात् उनके मत में अभिधवृत्ति और लक्षणावृत्ति को अतिरिक्त जो रसादि अर्थ होते है, तात्पर्यवृत्ति की सहायता से उनका ज्ञान होता है। प्रयोजनानुसार तात्पर्यवृत्ति सर्वप्रकार के अर्थों को प्रकाशित करने में समर्थ होती है। धनिक के समान मम्मट, विश्वनाथ आदि आलंकारिक भी वृत्ति चतुष्ट्य को स्वीकार करते हैं अर्थात् वे तात्पर्य वृत्ति मानते हैं मम्मट ने तात्पर्यवृत्ति के अस्तित्व को समर्थन करते हुए काव्यप्रकाश में कहा- अभिधा तात्पर्य लक्षणात्मक व्यापारत्रयातिवर्ती ध्वननादिव्यापरोऽनपह्नवनीय एव'। परवर्ती आचार्य विश्वनाथ भी तात्पर्य वृत्ति के विषय में मम्मटानुयायी है। सिद्धान्तमुक्तावली कृत विश्वनाथ न्यायपंचान ने कहा 'आसत्त्यादिवत् तात्पर्योऽपि शाब्दबोधं प्रति कारणमात्रमिति।' काव्य जगत में अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना और तात्पर्य वृतिचतुष्ट्य ईप्सित हैं।

22.3 अभिधा

अभि-उपसर्ग पूर्वक 'धा' धातु से अ्प्रत्यय से अभिधा शब्द निष्पन्न होता है। प्रत्येक शब्द का सर्वजन प्रसिद्ध कुछ मुख्य अर्थ होता है। सूर्य चन्द्र आदि के उच्चारण से उनके अपने अर्थ की प्रतीति होती है। शब्द जिससे, जिस व्यापार या वृत्ति से लोकप्रसिद्ध अर्थ का बोध कराता है वह व्यापार या वृत्ति अभिधा कही जाती है। आचार्य मम्मट ने अभिधा का लक्षण निरूपित किया- ''स मुख्याऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते।'' शब्द के जिस व्यापार या शक्ति से शब्द के संकेतित अर्थ का बोध होता है वह अभिधा कही जाती है यह अभिधा शक्ति या संकेत कहलाती है। शक्ति विषयक समालोचना में विश्वनाथ ने कहा - ''यत् पदेन सह पदार्थस्य सम्बन्ध एवं शक्तिः''। इस शब्द से यह अर्थ बोध होना चाहिए या ईश्वरेच्छा है वह शक्ति कही जाती है-'' शक्तिश्च पदेन सह पदार्थस्य संबन्ध''। सा चास्माच्छब्दादयमर्थो बोधब्य इतीश्वरेच्छारूपा'' यह सिद्धान्तमुक्तावली में कहा है। यह संकेत शब्द का शक्तिग्राहक है। अर्थात् एक निर्दिष्ट शब्द से एक निर्दिष्ट अर्थ ही बोध होना चाहिए। जैसे घटशब्द से संकेतितार्थ कम्बुग्रीवादिमान पिण्ड होता है। क्योंकि इस घटशब्द से कम्बुग्रीवादिमान पिण्ड यह अर्थ बोधव्य ईश्वरेच्छा है। इसी प्रकार 'आनय' इसका भी अभिधा वृत्ति से आनयन रूप क्रिया का बोध होता है घटशब्द से अभिध वृत्ति द्वारा कम्बुग्रीवादिमान् पिण्ड ही आता है। और वह वाच्यार्थ

होता है। विश्वनाथ साहित्यदर्पण में अभिधा का लक्षण कहा- ''तत्र संकेतितार्थस्य बोधनात् अग्रिमाभिधा''। अर्थात् साक्षात् संकेतित अर्थ में शब्द का जो मुख्य वृत्ति अन्तर अनुजीवक व्यापार वृत्ति है वह अभिधा है। शब्द के संकेतितार्थ जिस वृत्ति से बोध होता है वह अभिधा है। यह मुख्यवृत्ति है। अर्थ बोध के लिए यह सबसे पहले प्रयुक्त होती है। लक्षणा व्यंजना वृत्तियों की प्रवृत्ति से पूर्व अभिधावृत्ति प्रवृत होती है इस कारण लक्षणा और व्यंजनावृत्ति अभिधावृत्ति पर आश्रित है। अभिधावृत्ति में अन्य वृत्ति का आश्रय नहीं होता है। शक्त्यपरपर्याय संकेतितार्थ बोध जनक व्यापार अभिधा है।

'घटमानय ''यहा अभिधवृत्ति से घटशब्द का कम्बुग्रीवादिमान् पिण्ड यह संकेतितार्थ बोध होता है। घटम् इस शब्द के साथ कम्बुग्रीवादिमत पदार्थ का सम्बन्ध है यह ज्ञान अभिधवृत्ति से सम्भव है। क्योंकि इस शब्द से कम्बुग्रीवादिमत पदार्थ का ज्ञान हो यह ईश्वरेच्छा है। वह संकेतितार्थ अभिधावृत्ति से ही बोध होता है। जिस शब्द से संकेतित अर्थ का प्रतिपाद्य होता है वह वाचक कहा जाता है। जैसे घट शब्द वाचक है। अभिधवृति से जो अर्थ प्रतिपाद्य होता है वह वाच्य है जैसे कम्बुग्रीवादिमान पदार्थ यह वाच्यार्थ है।

22.4 अभिधा प्रक्रिया। संकेतग्रह का उपाय

कोई संकेत ज्ञान विशिष्ट समुत्पन्न जन किसी संकेत ज्ञान विशिष्ट समुत्पन्न द्वितीय जन को लक्ष्य करके 'गामानय' यह वाक्य कहता है। इसके बाद द्वितीय जन गो आनय रूप कर्म को करता है। संकेतज्ञानहीन कोई तृतीय जन यह सब कुछ देखता है। उसके बाद 'अश्वमानय' इस वाक्य का प्रयोग करता है। तब अश्व आनय रूप कर्म करता है। यह भी तृतीय जन देखता है। द्वितीय वाक्य में अश्वपद सन्निधान से गो भिन्न वस्तु का आनयन सम्भव है। इससे ज्ञान होता है कि गो शब्द का संकेत सास्नालंगूल वाला प्राणी है, अश्व शब्द का घोटक में संकेत होता है यह जानता है। उसके बाद 'गां बधान' इस वाक्य के श्रवण से गो बन्धान रूप कार्य करता है। बधान इस भिन्न क्रियापद सन्निवेश से भिन्न कार्य पैदा होता है। इससे आनयपद का आनयन किया में बधानपद का बन्ध ानक्रिया में संकेत है यह ज्ञान होता है। पदों के त्याग संयोग से संकेत रहित जन को संकेत ज्ञान पैदा होता है।

और किसी प्रसिद्धार्थ से बालक सन्दिग्ध संकेत शब्द के संकेत को अवधारण करता है। जैसे ''इह प्रभिन्नकमलोदरे मधूनि मधुकर: पिबति'' यहाँ मधु करता है इस व्युत्पत्ति से मधुकर शब्द का भ्रमर में संकेत मधुमक्षिका में समझता है। तब भ्रमर पंकज में पूर्व मधुपान को करता है। यह दृश्य हमारे द्वारा देखा गया। इससे कमलदसमभिहार से मधुकर शब्द का भ्रमर ही संकेत होता है।

कुछ के अनुसार केवल शब्द प्रमाण से संकेत ज्ञान होता है। साहित्यदर्पणकार ने कहा ''आप्तोष्पदेशात्''। जैसे'' अयम् अश्वशब्दवाच्य:'' यह आप्त द्वारा कहने पर वहां

टिप्पणी

प्रामाणिकत्वनिश्चय से बालक अश्वशब्द का घोटक में संकेत की अवधारण करता है ये तीनो प्रदर्शन मात्र है। व्याकरणादि भी अन्य संकेतग्रहोपाय ग्राह्य है- जैसे कहा ही-

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोशाप्तवाक्यात् व्यवहारतश्च।
वाक्यस्य शोषात् विवृतेर्वदन्ति सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः॥

पाठगत प्रश्न 22.1

1. व्याकरणशास्त्र में प्रसिद्ध वृतिशब्द का लक्षण क्या है?
2. वृत्ति शब्द का दूसरा नाम क्या है?
3. वृत्ति कितने प्रकार की है?
4. वृत्तियाँ के नाम क्या हैं?
5. वृत्ति का लक्षण क्या है?
6. अभिधा शब्द की व्युत्पति लिखिए।
7. अभिधवृत्ति का लक्षण लिखें।
8. दर्पणकार के मत में अभिधवृत्ति का लक्षण लिखिए।
9. संकेत क्या है?
10. अभिधवृत्ति से क्या प्रतिपाद्य होता है?

22.5 लक्षणा वृत्ति

आलंकारिकों ने तीन वृतियां स्वीकार की। उनमें से लक्षणावृत्ति अन्यतम है। मुख्यार्थ का अर्थात् वाच्यार्थ का तात्पर्यानुपति में बाधा होने पर यह वृत्ति प्रवृत होती है। वह लक्षणा रूढ़ि और प्रयोजन दो प्रकार की है। इस पाठ में दर्पणकारपण्डित विश्वनाथ कविराज अपने ग्रन्थों में जैसा लक्षणवृत्ति का प्रतिपादन किया, वैसा ही हम जानेंगे।

22.6 लक्षणा का लक्षण

किसी वाक्य के उच्चारण में सर्वप्रथम अभिधवृत्ति प्रवृत होती है वहां अभिधा से यदि वाक्यर्थ न हो तो मुख्यार्थ से सम्बन्धित का आश्रय लेकर जिस वृत्ति से अर्थावबोध होता है वह वृत्ति लक्षणा है। लक्षण ही लक्षणा है अथवा जिसके द्वारा अर्थ की प्रतीति की जाती है उसे लक्षणा कहते हैं। पण्डित कविराज विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में कहा है-

मुख्यार्थ बाधे तद्युक्तो ययान्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।।

उक्त लक्षण में उक्तशब्द के तात्पयार्थ की अनुपपत्ति होती है। मुख्यार्थ या अभिधेयार्थ के तात्पयार्थनपुपत्ति में रुढि अर्थात् प्रसिद्धवशाता या प्रयोजन अर्थात् उद्देश्य विशेष से जिस वृत्ति से मुख्यार्थ से सम्बद्ध अन्यार्थ की प्रतीति होती है वह शब्द की आरोपित वृत्ति लक्षणा है। अर्थात् जब मुख्यार्थ के असंगत होने पर उससे सम्बन्धित अन्य अर्थ रूढि या प्रयोजन के कारण जिस शक्ति द्वारा लक्षित होता है, वह अर्पिता आरोपित या कल्पित शक्ति लक्षणा कही जाती है। ''यया अन्योऽर्थः प्रतीयतेऽसौ लक्षणा'' यह लक्षण का लक्षण है।

22.6.1 प्रयोजनवती लक्षणा

गंगायां घोषः इस उदाहरण में सर्वप्रथम अभिधवृत्ति प्रवृत होती है गंगा शब्द का अभिधा से जल प्रवाह यह अर्थ प्राप्त होता है। इससे इस वाक्य का अर्थ होता है कि गंगाजल प्रवाह में घोष है इस जल में तो केवल मछली आदि रहती है। मनुष्य नहीं यह अभिधा प्राप्त अर्थ का बोध होता है। अतः इस वाक्य से अर्थबोध नहीं होता। इसलिए यहां इस वृत्ति से मुख्यार्थ सम्बन्ध का ग्रहण होता है। गंगायां घोषः इसमें गंगा के समीप आदि सम्बन्ध से युक्त गंगा के किनारे यह अर्थ लक्षणावृत्ति से स्वीकार किया जाता है, इस लक्षणा से मुख्यार्थ का बोध होने पर गंगा के समीप आदि सम्बन्ध से युक्त गंगा के किनारे यह अर्थ लक्षणावृत्ति से स्वीकार किया जाता है, इस लक्षणा से मुख्यार्थ का बोध होने पर गंगा के किनारे घोष है यह मुख्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रतीत होता है। इस लक्षणा के फल की प्रवृत्ति में रूढ़ि या प्रयोजन कहा जाता है। गंगायां घोषः इस उदाहरण में गंगा किनारे घोष रहते हैं इस अर्थ में गंगा के धर्म घोष में अर्थ से आभीरबस्ती का आरोप किया जाता है। उससे गंगा के शैत्यपावनत्वादि रूप धर्म आभीरपल्ली है यह प्रतीति होती है। इससे यहां घोषों के निवास स्थान शीतत्व पावनत्व आदि धर्मो का प्रयोजन फलित होता है। अतः यहा प्रयोजनवती लक्षणा है।

इसका अन्य उदाहरण सिंहो माणवक यहाँ माणवक चतुष्पाद् विशेष सिंह नहीं होता है। सिंह शब्द मुख्यार्थ का बोध है। शौर्यादि, तीक्ष्णादि धर्मो के सादृश्य सम्बन्ध आश्रित लक्षणावृत्ति से सिंह सदृश माणवक अर्थ का बोध होता है। यहां तीक्ष्णत्वादि धर्म प्रयोजन है।

22.6.2 रुढ़िमूला लक्षणा

'कलिंग साहसिकः' इस उदाहरण में रूढि के कारण लक्षणा प्रवृत होती है। कलिंग शब्द में अभिधवृत्ति से देश विशेष का बोध होता है। इस अभिधा से कलिंग नामक देश साहसिक अर्थ की प्रतीति होती है। क्योंकि साहसिकत्व वीरत्व आदि धर्म अचेतन देश में नहीं हो सकते। अचेतन वस्तु में चेतन धर्म स्थापित करने के लिए प्रभावित हो,

टिप्पणी

उपलक्षणा होने से चेतन से चैतन्य धर्म होते है। इसलिए देश साहसिक आदि धर्मो से युक्त नहीं होता अत: यहा मुख्यार्थ का बोध होता है। इस मुख्यार्थ के बोध होने पर कंलिग देश में लक्षणा प्रवृत होती है। उस लक्षणा से उस देश संयुक्त कंलिगजना लक्षित होता है। क्योंकि देश ग्रहण के संयोग सम्बन्ध से उस स्थान का ग्रहण किया जाता है।

उससे कंलिग देशवासी साहसिक है यह लक्ष्यार्थ प्रतीत होता है देशग्रहण रूढि, की प्रवृत्ति बोध होती है। उससे यहां रूढिवश ही इस अर्थ की प्रतीति हुई अत: यहां रूढिमूला लक्षणा है।

साहित्यदर्पणकार ने अपने ग्रन्थ में एक शंका उठाई कि काव्यप्रकाशकार ने 'कर्मणिकुशल' में रूढि कहाँ है। जैसा कि कुशल शब्द का अभिधा से कुशान् लाति यह अर्थ आता है। उस अर्थ के समान मुख्यार्थ प्रकृति का बोध होने से दक्षरूपार्थ लक्षणा से बोध होता है। विश्वनाथ ऐसा नहीं मानते क्योंकि कुशाओं को लाने वाला रूप अर्थ के व्युत्पत्ति से प्राप्य होने पर भी दक्ष रूप अर्थ ही मुख्यार्थ होता है। निश्चय ही शब्द की व्युत्पत्ति का निमित्त और ही होता है एवं प्रवृत्ति का निमित्त अलग ही होता है।

22.6.3 काव्यप्रकाशकार का मत

काव्यप्रकाशकार मम्मटाचार्य ने अपने ग्रन्थ में लक्षणा का स्वरूप प्रकाशित किया है उसका लक्षण है–

मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्याऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपिता क्रिया।

रूढि या प्रयोजन से मुख्यार्थ का बाधा होने पर उस मुख्यार्थ के योग से जिस लक्षणा से अन्य अर्थ की प्रतीति होती है वह शब्द आरोपित करना ही लक्षणा है।

पाठगत प्रश्न 22.2

11. दर्पणकार के अनुसार लक्षणा का लक्षण लिखिए।
12. काव्यप्रकाशकार के अनुसार लक्षणा का लक्षण लिखिए।
13. लक्षणा कितने प्रकार की है?
14. काव्यप्रकाशकार कौन हैं?
15. साहित्यदर्पण के रचयिता कौन हैं?
16. लक्षणा किस पर आरोपित वृत्ति है।?

टिप्पणी

17. किसके बाधा होने पर लक्षणा प्रवृत होती है।

18. लक्षणा से लब्धार्थ को क्या कहते हैं?

22.7 दर्पणकार के मत में लक्षणा के भेद

साहित्यदर्पणकार पण्डित विश्वनाथ कविराज ने अपने ग्रन्थ में लक्षणा के सोलह (षोडश) मुख्य भेदों का प्रदर्शन किया है। यहाँ हम उसके विषय में जानेंगे। यह लक्षणा दो प्रकार से विभाजित है-उपादानलक्षणा और लक्षण लक्षणा।

22.7.1 उपादानलक्षणा

यह प्रतिपाद्य लक्षणा मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ दोनों की उपादान होने से उपादान लक्षणा है। इसके रूढि एवं प्रयोजन में दो भेद प्राप्त होते है। जैसे कि साहित्यदर्पण में कहा गया है-

मुख्यार्थस्येतराक्षेप वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये।
स्यादात्मानोऽप्युपादानादेषोपादानलक्षणा।।

वाक्य से प्रतिपाद्य अर्थ में अन्वय की सिद्धि के लिए मुख्यार्थ का दूसरे अर्थ में अन्वय की सिद्धि के लिए मुख्यार्थ का दूसरे अर्थ में आक्षेप एवं अपने अर्थ का भी ग्रहण जिस लक्षणा से किया जाता है वह उपादान लक्षणा कही जाती है। ''रूढि में उपादान लक्षणा का उदाहरण-श्वेत: धावति'' सफेद दौडता है। यहां रूप क्रिया में कर्ता द्वारा व्यापार के आश्रय के रुप में मात्र अपने से अन्वय न हो पाने वाले श्वेत से इसकी सिद्धि के लिए अपने से सम्बन्धित अश्व का आक्षेप किया जाता है।

प्रयोजन में उपादान लक्षणा का उदाहरण-कुन्ता प्रविशन्ति, कुन्त शब्द का वस्तु अर्थ अभिधा से प्राप्त है। कुन्तादि के अचेतन होने के कारण प्रवेश करना रूप क्रियाओं में कर्तापन होने से वाक्यार्थ अन्वय को प्राप्त करते हुए के द्वारा इसकी सिद्धि के लिए स्वयं से सम्बद्ध पुरूषादि का आक्षेप किया जाता है। कुन्तादि का अत्यन्त तीक्ष्णता प्रयोजन है और इनमे स्वयं मुख्यार्थ का भी ग्रहण किया जाता है अत: प्रयोजन में उपादान लक्षणा है।

यह उपादान लक्षणा सारोपा और साध्यवसाना भेद से दो प्रकार की है सारोपा उपादान लक्षणा और साध्यावसाना उपादान लक्षणा। अत: कहा गया है-

विषयस्यानिगीर्णस्यान्यतादात्म्यप्रतीतिकृत्।
सारोपास्यान्निगीर्णस्य मता साध्यवसानिका।।

विषयी लक्ष्यार्थ के द्वारा अनाच्छादित अर्थात् अतिरस्कृत मुख्यार्थ का उसी लक्ष्यार्थ के

टिप्पणी

साथ तादाम्य (अभेद) की प्रतीति कराने वाली लक्षणा सारोपा होती है। यही रूपक अलंकार का बीज है। रूढ़ि में उपादान लक्षणा सारोपा जैसे- अश्वः श्वेतः धावति सफेद घोड़ा दौड़ रहा है। यहां मुख्यार्थ श्वेत के इतर अश्व का ग्रहण होता है। यहाँ विषयी अश्व के उच्चारण या उल्लेख से सारोपा उपादान है। क्योंकि श्वेत गुण से युक्त लक्ष्यार्थ के द्वारा अनाच्छादित स्वरुप वाला घोड़ा स्वयं मे समवाय संबंध से स्थित गुण के अभेद से प्रतीत होता है।

प्रयोजन में उपादानसारोपा-एते कुन्ताः प्रविशन्ति, ये भाले प्रवेश कर रहे है। एते सर्वनाम से कुन्तों को धारण करने वाले पुरुषों का निर्देश होने के कारण सारोपा है।

जहां पर विषयी का उच्चारण या उल्लेख नहीं होता है वहां साध्यावसाना होती है साहित्यदर्पण में कहा गया है-

''निगीर्णस्य पुनर्विषयस्तान्यतादात्म्य प्रतीतिकृत्साध्यवसाना''

वह साध्यवसाना उपादान लक्षणा रूढ़ि और प्रयोजन से दो प्रकार की होती है। उनमें रूढ़ि में उपादान लक्षणा साध्यवसाना का उदाहरण- ''श्वेतो धावति'' यहां अश्वरुप विषयी का उच्चारण नहीं होने से साध्यवसाना उपादान लक्षणा है। प्रयोजन में उपादान लक्षणा का साध्यवसाना का उदाहरण- ''कुन्ताः प्रविशन्ति'' यह भी पूर्व के समान विषयी सर्वनाम के ग्रहण का अभाव होने से साध्यवसाना है।

वह उपादान लक्षणा सारोपा शुद्धा और गौणी भेद से दो प्रकार की होती है। साहित्यदर्पण में कहा है-

सादृश्येतरसंबन्धः शुद्धास्ताः सकला अपि।
सादृश्यात्तु मता गौण्यस्तेन षोडशभेदिताः''

उनमें से रूढ़ि में उपादान लक्षणा सारोपा शुद्धा- अश्वः श्वेतो धावति रूढि में ही उपादान लक्षण सारोपा गौणी जैसे- ''एतानि तैलानि हेमन्ते सुखानि'' ये तैल हेमन्त में सुखदायक है। यहां तैलानि पद का मुख्यार्थ है- तिलों का विकार यहां मुख्यार्थ के बाधित होने पर रूढ़ि प्रसिद्धि में सादृश्य सम्बन्ध से तेल का स्नेह चिकनाई अर्थ ग्रहण किया जाता है। साथ ही तेल पद अपना मुख्यार्थ नहीं छोडता। एतानि सर्वनाम से सारोपा होने के कारण रूढ़िवती उपादान लक्षणा सारोपा गौणी है।

रूढि में उपादान लक्षणा साध्यवसाना शुद्धा -जैसे-श्वेतों धावति रुढि में उपादान लक्षणा साध्यवसाना गौणी जैसे -तैलानि हेमन्ते सुखानि प्रयोजन में उपादान लक्षणा सारोपा शुद्धा जैसे - एते कुन्ता प्रविशन्ति

प्रयोजन में उपादान लक्षणा सारोपा गौणी जैसे - एते राजकुमारा गच्छन्ति

प्रयोजन में उपादन लक्षणा साध्यवसाना शुद्धा - जैसे कुन्ताः प्रतिशन्ति

टिप्पणी

प्रयोजन में उपादन लक्षणा साध्यवसाना गौणी जैसे – राजकुमारा: गच्छन्ति

इस प्रकार उपादान लक्षणा के आठ भेद हैं।

22.8 लक्षण लक्षणा

जिस लक्षणा में मुख्यार्थ अन्य अर्थ का उपलक्षण हो अर्थात् जो अपने मुख्यार्थ को छोड दे उसे जहत्लक्षणा या जहत्स्वार्था भी कहा जाता है। साहित्यदर्पण मे कहा भी गया है–

अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थे परस्यान्वसिद्धये।
उपलक्षण हेतुत्वादेषा लक्षण लक्षणा॥

वाक्यार्थ में मुख्यार्थ से भिन्न अर्थ के अन्वयबोध के लिए जहाँ कोई शब्द अपने स्वरुप अर्थ का समर्पण कर दे अर्थात् मुख्य अर्थ को छोड़कर लक्ष्य अर्थ का उपलक्षण बन जाये उस लक्षणा को लक्षण लक्षणा कहा जाता है। वह भी रुढि और प्रयोजन से दो प्रकार की होती है उसमें से रुढ़ि में लक्षण लक्षणा–कलिंग साहसिक:कलिंग पुरुष युद्ध करता है। इस वाक्य में कलिंग देशवासी अर्थ मे प्रसिद्ध है अत: रुढि है, कलिंग पद अपना वाच्यार्थ देश विशेष छोड़ देता है अत: लक्षणा है।

प्रयोजन मे लक्षण लक्षणा –जैसे–गंगायां घोष:– यहां गंगा प्रवाह रुप मुख्यार्थ का ग्रहण नहीं होता अपितु तटरूप अर्थ का बोध होता है। इसलिए यहां लक्षण लक्षणा है लक्षण लक्षणा का उदाहरण –

उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते सुजनता प्रथिता भवता परम्।
विदधदीदृशमेव सदा सखे, सुखितमास्स्व तत: शरदां शतम्॥

इस श्लोक में उपकृतम् पद मुख्यार्थ के त्याग से विपरीत लक्षणा द्वारा अपकतम् यह लक्ष्यार्थ बोध होता है अत: यहां लक्षण लक्षणा स्पष्ट होती है।

यह लक्षणलक्षणा भी आरोप और अध्यवसान भेद से दो प्रकार की है। जिस का लक्षण है– ''आरोपाध्यवसानाभ्यां प्रत्येक'' ता ''अपि द्विध।'' रूढि में लक्षण लक्षणा सारोपा–जैसे– कलिंग: पुरुषो युध्यते यहाँ कलिंग और पुरुष का आधार–आधेय भाव सम्बन्ध है। यहां विषयी पुरूष शब्द का उल्लेख होने से सारोपा है।

रुढ़ि में लक्षण लक्षणा साध्यवसाना जैसे– कलिंग: साहसिक: प्रयोजन में लक्षण लक्षणा सारोपा जैसे– आयुधर्श्तम् यहां कार्य–कारण सम्बन्ध है। आयु का कारण घी कार्यकारण भाव सम्बन्ध से सम्बन्धी आयु की अभेद तादाम्य से प्रतीति होती है। आयु के अन्य कारण से विलक्षणता पूर्वक तथा निश्चित रुप से आयुष्करत्व प्रयोजन है।

प्रयोजन में लक्षणलक्षणा साध्यवसान जैसे– आयु: पिबति

टिप्पणी

वह लक्षण लक्षणा सारोपा और साध्यवसाना के प्रत्येक शुद्धा और गौणी दो प्रकार से विभाजित है। जिसका लक्षण–

सादश्श्येतरसम्बन्धः शुद्धास्ताः सकला अपि।
सादश्श्यात्तु मता गौण्यस्तेन षोडशभेदिता।।

रूढ़ि में लक्षणलक्षणा सारोपा शुद्धा –कांलिगः पुरुषो युध्यते।
रूढ़ि में लक्षणलक्षणा सारोपा गौणी –राजा गौडेन्द्रं कण्टकं शोधयति।

राजा गौड नाम के प्रसिद्ध देश का इन्द्रा राजा के रूप मे है।

यहां विषयी गौडेन्द्र पद का उल्लेख होने से सारोपा है।

रूढि में लक्षणलक्षणा साध्यवसाना शुद्धा–कलिंगः साहसिकः।
रूढ़ि में लक्षणलक्षणा साध्यवसाना गौणी –राजा कण्टकं शोधयति।

प्रयोजन में लक्षणलक्षणा सारोपा शुद्धा–आयुर्धृतम्।
प्रयोजन में लक्षणलक्षणा सारोपा शुद्धा गौणी–गौर्वाहीकः ।

यहाँ गौ और वाहिक में अभेद की अनुपपत्ति से मुख्यार्थ वाहीक बैल का बोध हो जाता है। दोनों में मूर्खत्व सामान्य होने से सादृश्य सम्बन्ध बन जाता है। आरोप विषय वाहीक शब्द का निगरण न होने से सारोपा है। वाहिक शब्द का मुख्यार्थ पंजाब लिया जाता है।

प्रयोजन में लक्षण लक्षणा साध्यवसाना शुद्धा–आयुः पिबति
प्रयोजन में लक्षणलक्षणा साध्यवसाना गौणी– गौर्जल्पति

इस प्रकार लक्षणलक्षणा के आठ भेद हुए। उपादान लक्षणा के आठ और लक्षण लक्षणा के आठ भेद किये गये है इस प्रकार लक्षणा 16 प्रकार से पण्डितराज विश्वनाथ ने अपने ग्रन्थ साहित्यदर्पण मे विस्तार से प्रतिपादित किया है।

पाठगत प्रश्न 22.3

19. लक्षणा कितने प्रकार की है?
20. उपादान लक्षणा के कितने भेद हैं?
21. रूढ़ि में उपादान लक्षणा साध्यवसाना शुद्धा का उदाहरण क्या है?
22. प्रयोजन में लक्षण लक्षणा के सारोपा गौणी का उदाहरण क्या है?
23. रूढि में उपादान लक्षणा के सारोपा का गौणी का उदाहरण क्या है?
24. प्रयोजन में उपादान लक्षणा के साध्यवसाना के शुद्धा का उदाहरण क्या है?

25. रूढि में लक्षणलक्षणा के साध्यवसाना का गौणी का उदाहरण क्या है?

26. प्रयोजन में उपादान लक्षणा के साध्यवसाना गौणी का उदाहरण क्या है?

27. रुढि में लक्षणलक्षणा के साध्यवसाना के शुद्धा का उदाहरण क्या है?

28. प्रयोजन में लक्षणलक्षणा के साध्यवसाना शुद्धा का उदाहरण क्या है?

22.9 व्यंजना

आलंकारिक सम्प्रदाय में प्रसिद्ध वृत्तियों में व्यंजनावृत्ति या शब्द व्यापार प्रसिद्ध है। वि उपसर्ग पूर्वक अञ्ज्धतु प्रकाशन अर्थक है। वि उपसर्ग विशेष अर्थ का द्योतक है। इसलिए जिस व्यापार से विशेष रुप अर्थ का प्रकाश होता है वह व्यापार व्यंजना कहलाता है। यह विशेष रुप अर्थ रमणीय सहृदय श्लाघ्य और प्रतीयमान होता है। इसे ही व्यंग्यार्थ कहते है। जैसे मुख्यार्थ की बोधिका अभिधा, लक्ष्यार्थ की बोधिका लक्षणा तथा व्यंग्यार्थ की बोधिका व्यञ्जना होती है। साहित्यदर्पण में कहा गया है-

वाच्योऽर्थोऽभिधया बोध्यो लक्ष्यो लक्षणया मतः।
व्यंग्यो व्यंजनया ताः स्युस्तिस्रः शब्दस्य शक्तयः॥

जैसे अंगनाओं में अवयवादि के अतिरिक्त कुछ अन्य ही लावण्य सहृदयों के नयनों में अमृत के समान होता है। उसी प्रकार वाणी में वाच्यार्थ से भिन्न कुछ अन्य व्यंग्यार्थ होता है। आनन्दवर्धन ने ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में कहा है-

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
यत्यत्प्रसिद्धावयवतिरिक्तं विभाति लावण्यमिवांगनासु॥

यह व्यंग्यार्थ व्यंजना वृत्ति से बोध होता है। व्यंजना की परिभाषा आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण ने इस प्रकार दी है।

विरतास्वभिधद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः।
सा वृत्तिर्व्यंजना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च॥

अर्थः- अभिधा लक्षणा और तात्पर्य ये तीन वृत्तियां है जब ये अपने अपने अर्थ का बोध कराकर क्षीणशक्ति होती है तब जिस वृत्ति से वाच्य लक्ष्यार्थ की अपेक्षा से किसी भिन्न अर्थ का बोध होता है वह वृत्ति व्यंजना कहलाती है। यह व्यंजना शब्दनिष्ठ, अर्थनिष्ठ, प्रकृतिनिष्ठ, प्रत्ययनिष्ठ और निपातनिष्ठ आदि होती है।

जैसे गतोऽस्तम् अर्कः यह एक वाक्य है। यहां अभिधावृत्ति से सूर्य अस्त हो गया यह अर्थ होता है। परन्तु प्रकरण भेद से व्यंजना द्वारा अनेक व्यंग्यार्थो का बोध होता है। जैसे खेलते हुए बालकों प्रति पिता की उक्ति होने पर बालकःगच्छ गच्छ यह व्यंग्यार्थ

को ग्रहण करके घर जाते हैं। इसी प्रकार अभिसारिका के प्रति यह कथन हो तो अभिसरण करो, यह व्यंग्यार्थ है। ब्रह्मचारी के प्रति यह कथन हो तो सन्धयावन्दन करो, यह व्यंग्यार्थ है। गोपालक के प्रति यह कथन हो तो गायों को बाडे में ले चलो इत्यादि प्रकरण भेद से व्यंग्यार्थो का एक ही वाक्य से बोध होता है।

प्रसिद्ध साहित्यिक जयदेव चन्द्रालोक के सातवें मयूख मे व्यंजना का स्वरुप इस प्रकार कहते है।

वृत्ति भेदै स्त्रिभिर्युक्ता स्त्रोतोभिरिव जाह्नवी।
भारती भाति गम्भीरा कुटिला सरला क्वचित्।।

गम्भीर कुटिल और सरल तीन प्रकार के प्रवाहों से गंगा शोभित होती है उसी प्रकार तीन प्रकार की वृत्तियों से युक्त वाणी भी गम्भीर कुटिल और सरल होती है। यहां गम्भीर पद से व्यंजना, कुटिलपद से लक्षणा और सरलपद से अभिधा स्वीकार की गयी है। व्यंजना गम्भीर होती है इसका तात्पर्य है कि जैसे वाच्यार्थ स्पष्टतया से प्रतीत होता है व्यंग्यार्थ उतना स्पष्टता से नहीं कहा जाता है। जैसे गम्भीर पुरुष के मनोभाव सभी सरलता से नहीं समझ सकते वैसे ही व्यंग्यार्थ का ज्ञान भी साधारण जनों को न होकर सहृदय जनों को ही होता है अत: इसके समान गम्भीर व्यंग्यार्थ की बोधिका व्यंजना भी गम्भीर होती है।

आशाधरभट्ट ने भी अभिधा का गंगा नदी के साथ, लक्षणा का यमुना नदी के साथ और व्यंजना का सरस्वती नदी के साथ समानता कहकर वाणी को त्रिवेणी के रूप में प्रदर्शित करते हैं। जैसे सरस्वती भूमि के अन्दर स्थित होने से लोगों को दृष्टिगोचर नहीं होती उसी प्रकार व्यंजना भी साधारण जनों के लिए अगोचर और सहृदय जनों गम्य होती है। इस व्यंजना को निपुणता से ही समझा जाता है। जैसा कि प्रसिद्ध उक्ति है–

शक्तिं भजन्ति सरला लक्षणां चतुरा जना:।
व्यंजना नर्ममर्मज्ञा: कवय: कमना जना:।।

22.9.1

व्यंजना के भेद

व्यंजना के अनेक भेद हैं। विश्वनाथ कविराज ने साहित्यदर्पण के द्वितीय परिच्छेद में निरुपण किया है उनके मत मे व्यंजना के प्रधान रुप से दो भेद है–शाब्दीमूला और आर्थीमूला।

1 शाब्दीमूलाव्यंजना–शाब्दीमूला व्यंजना पुन: दो प्रकार की है अभिधामूला एवं लक्षणामूला। **अभिधामूला व्यंजना** – अभिधामूला व्यंजना का लक्षण साहित्यदर्पण में प्रतिपादित किया है– अनेकार्थस्य शब्दस्य संयोगाद्यैर्नियन्त्रिते।

टिप्पणी

एकत्रार्थऽन्यधी हेतु र्व्यंजना साऽभिधाश्रया॥

एक शब्द के अनेक अर्थ होते है, यदि संयोगादि से एक अर्थ में अभिधा से नियन्त्रित होकर जो शब्द के अन्यार्थबोध में कारणभूत वृत्ति है वह अभिधमूला व्यंजना होती है। उदाहरण- दुर्गालंघितविग्रहो मनसिजं संम्मीलयंस्तेजसा,

प्रोद्यद्राजकलो गृहीतगरिमा विष्वग्वृतो भोगिभिः।
नक्षत्रेशकृतेक्षणो गिरिगुरौ गाढां रूचि धारयन्,
गामाक्रम्य विभूतिभूषिततनू राजत्यूमावल्लभः॥

अर्थः- यह श्लोक उमानाम की महारानी के पति भानुदेव की स्तुति परक है। अतः प्रकरणवश अभिधवृत्ति से यह श्लोक भानुदेव का ही प्रशंसा बोधक है परन्तु यहां कवि द्वारा शब्द सन्निवेश ऐसा किया गया कि उमापति महादेव का भी बोध होता है। अन्त में महादेव और भानुदेव के मध्य में उपमान-उपमेय भाव ध्वनित होता है। अभिधार्थ है- दुर्गो से अलंघित विग्रहवाले, स्वसौन्दर्य से कामदेव के विजेता, राजकला से सम्पन्न, लब्ध गौरववाले, विषयोपभोगकर्ताओं के द्वारा घिरे हुए, क्षत्रिय राजाओं की भी उपेक्षा करने वाले, शिव में दृढ़ आस्था को धारण करने वाले, पृथ्वी को जीतकर ऐश्वर्य से सुशोभित शरीरवाले उमा नामक महारानी के प्रिय (भानुदेव) सुशोभित हो रहे है यह वाच्यार्थ है।

परन्तु इस श्लोक का दुर्गालंघितविग्रह, सम्मीलयन, राजकमल भोगि, नक्षत्रेश, गिरिगुरु, गाम्, विभूति और उमा आदि पदों से शंकर स्तुति परक अर्थ भी बोध होता है। व्यंजना से अर्थ है- दुर्गा पार्वती के आलिंगन से आक्रान्त देहवाले, स्वतेज से कामदेव को भस्म करने वाले, चन्द्रकला से सुशोभित मस्तक वाले, जगद्गुरुत्व को प्राप्त करने वाले, सर्पो से व्याप्त शरीरवाले, चन्द्रमा को नेत्र बनाने वाले, हिमालय रूप श्वसुर मान्यजन से दृढ अभिलाषा वाले, वृषभ पर आरुढ होकर भस्म से अलंकृत शरीर वाले उमा गौरी के प्रिय शिव सुशोभित है।

यहां प्रकरण से नियन्त्रित होने पर अभिधवृत्ति द्वारा उमावल्लभ शब्द का उमा नामक महादेवी का उसके प्रियतम भानुदेव रूप अर्थ वाच्य में नियन्त्रित होने पर गौरीवल्लभ रूप अर्थ शिव व्यंजनावृत्ति द्वारा ही ज्ञात होता है अतः यहां अभिधमूला व्यंजना है।

लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना - लक्षणामूला शाब्दीव्यंजना का लक्षण साहित्य दर्पण में-

लक्षणोपास्यते यस्यकृते तत्तु प्रयोजनम्।
यया प्रत्याय्यते सा स्याद्व्यंजना लक्षणाश्रया॥

अर्थः- जिस प्रयोजन के लिए लक्षणा प्रयुक्त होती है वह प्रयोजन जिस वृत्ति द्वारा अभिव्यक्त होता है वह लक्षणामूला शब्दी व्यंजना होती है।

उदाहरण- गंगायां घोषः - यहां शीतत्व और पावनत्व का अतिशय प्रयोजन है। वह प्रयोजन व्यंजना वृत्ति से सिद्ध होता है। जल प्रवाह आदि अर्थ के बोधन के बाद अभिधावृत्ति तथा तट आदि अर्थ बतलाने पर लक्षणा वृत्ति के विरत होने पर जिस वृत्ति से शीतलता और पावनतादि का अतिशय लाया जाता है वह लक्षणा मूला व्यंजना है।

आर्थीव्यंजना - वक्ता, बोद्धव्य (श्रोता) वाक्य, प्रकरण, देश, काल, काक चेष्टा आदि के वैशिष्ट्य से जो वाच्यादि से भिन्न व्यंग्यार्थ को अभिव्यक्त करे वह वृत्ति आर्थीव्यंजना होती है। साहित्यदर्पण में कहा है- वक्तृबोद्धव्यवाक्यानामन्यसंनिधिवाच्ययोः

प्रस्ताव देश कालाना काकोश्चेष्टादिकस्य च।
वैशिष्ट्यादन्यमर्थं या बोधयेत्साऽर्थ सम्भवा॥

उदाहरण- कालो मधुः कुपित एष च पुष्पधन्वा धीरा वहन्ति रति खेदहराः समीराः।
केलीवनीयमपि वंजुलकुंजमंजुर्दूरे पतिः कथय किं करणीयमद्य॥

अर्थ- समय बसन्त ऋतु का है कामदेव अत्यन्त कुपित हैं, मन्द-मन्द और रति की थकान का हरण करने वाली हवाएँ बह रही हैं यह सामने स्थित अशोक के वृक्षों से सुन्दर बना छोटा सा क्रीडास्थल है पति दूर देश में है, ऐसे अवसर पर क्या करना चाहिए? यह तू ही बता।

यहां वक्त्री नायिका के मदन विह्वलत्वादि वैशिष्ट्य के योग से तुम इस स्थान पर अविलम्ब प्रच्छन्न कामुक को भेजो- यह अर्थ व्यंजित है। यहां एक उदाहरण मात्र दिखाया गया है अन्य उदाहरण साहित्यदर्पण आदि ग्रन्थों में खोजे जा सकते हैं।

यह आर्थी व्यंजना पुनः अर्थ के वाच्य लक्ष्य और व्यंग्य रूप से त्रिविधता से कहे गये प्रत्येक के मध्य में एक एक त्रिविध प्रकार है इस प्रकार आर्थी व्यंजना असंख्य प्रकार की है।

शंका - शाब्दी व्यंजना में अर्थ की, आर्थी व्यंजना में शब्द की उपयोगिता है अतः किसलिए उन दोनों का पृथक्ता से निर्देश किया। इसके विषय में कहते हैं कि शब्द व्यंजकता में भी अन्य अर्थ की अपेक्षा करता है और अर्थ भी शब्द की उसी प्रकार अपेक्षा करता है। इस कारण एक की व्यंजकता में दूसरे की साहकारिता अवश्य माननी चाहिये।

यह व्यंजना प्रकृति, प्रत्यय, उपसर्ग निपात-वर्ण रचनादि में भी होती है **जैसै**-

चपलांगां दृष्टिं स्पशसि बहुशो वेपथुमतीं, रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः।
करं व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरं, वयंतत्वान्वेषान्मधुकर, हतास्त्वं खलु कृती॥

यह उक्ति अभिज्ञानशाकुन्ल में शकुन्तला को व्याकुल करते हुए भ्रमर के प्रति दुष्यन्त

की है। इस श्लोक में हता: शब्द प्रयुक्त हुआ है न कि दुख को प्राप्त हुआ। हता: शब्द के प्रयोग से ही दु:खातिशय रूप व्यंग्यार्थ की प्रतीति होती है। यहां हन् धातुरुप या प्रकृति में ही वहा व्यंजना है। इसी प्रकार अन्य उदाहरणों मे भी व्यंजना जाननी चाहिए।

व्यंजनासिद्धि - व्यंजना अभिधा लक्षणा आदि सम्पूर्ण वृतियों से भिन्न कवि आलंकारिक सम्प्रादय प्रसिद्ध अभिनव वृत्ति है। यह व्यंजना रस रसामास-भाव-भावाभासादि के बोध के लिए अवश्य ही आलंकारिको द्वारा स्वीकृत है। इस वृत्ति का सर्वप्रथम आनन्दवर्धनाचार्य द्वारा ध्वन्यालोक में प्रतिपादित किया है। जैसा कि ईश्वर संकेत से शब्द में स्थित स्वाभाविक वृत्ति अभिधा होती है। यह अभिधा शब्द के वाच्यार्थ को ही कहती है। लक्षणा तो प्रयोजनादि के निमित्त से मुख्यार्थ बोध के उत्पाद्य वक्ता द्वारा शब्द पर समारोपित कृत्रिम वृति है। व्यंजना तो प्रकरण वक्ता बोद्धत्यादि के निमित्त आश्रित होकर समुन्मीलित वृत्ति है।

शब्द बुद्धि कर्मो का विराम करके व्यापार का अभाव होता है यह नियम है। यदि शब्द बुद्धि और कर्म का व्यापार समाप्त होता है तो पुन: उसका व्यापार नहीं होता है। जैसे- ''देवदत्त: ग्रामं गच्छति'' यहाँ अभिधा वृत्ति से सर्वप्रथम सभी पदों का पृथक-पृथक अर्थ बोध होता है। उसके बाद वाच्यार्थ को कहकर अभिधा विरत होती है। उसके बाद तात्पर्य वृत्ति से कर्ता कर्मत्व आदि रूप से सभी का अन्वय होने पर एक वाक्यार्थ सम्पादित होता है। यदि तात्पर्य अनुपपत्ति हो तो लक्षणा स्वीकार की जाती है। जैसे गंगायां घोष: में अभिधा वृत्ति से गंगाशब्द से जलप्रवाह रूप अर्थ का बोध होता है। घोष शब्द से आभीर पल्ली रुप अर्थ का बोध होता है। इस प्रकार मुख्यार्थ ज्ञात होने पर तात्पर्य की अनुपपत्ति होती है। जल प्रवाह में आभीर पल्ली का अवस्थान कभी संभव नहीं के कारण से। अत: लक्षणा वृत्ति गंगापद सामीप्य सम्बन्ध से स्वसम्बन्धि तटरूप अर्थ का बोध करता है। उसके बाद लक्षणा से गंगा के किनारे घोष है यह अर्थ होता है। इस प्रकार अभिधा तात्पर्य लक्षणा तीन शक्तियों का अपने अपने अर्थ बोध से विरत हो जाने पर रसादि का बोध कराने के लिए तुरीय कोई वृत्ति अवश्य स्वीकार करनी चाहिए।

अभिधा व्यंग्यार्थ बोधिका नहीं है- अभिधा संकेतितार्थ बोध कराकर विरत होती है। अत: उसका रसादिव्यंग्यार्थ बोधन मे पुन: सामर्थ्य नहीं है। यहां कुछ लोग आक्षेप करते हैं कि यह तो दीर्घ दीर्घतर अभिधा का ही व्यापार है। इसका तात्पर्य है किसी बलवान सैनिक द्वारा प्रेरित एक बाण के समान जो एक ही वेग व्यापार से शत्रु के वर्मच्छेद, मर्मभेद और प्राण हरण को धारण करता है। वैसे ही सुकवि द्वारा प्रयुक्त एक ही शब्द एक ही अभिधा व्यापार से पदार्थो परिस्थिति अन्वयबोध और व्यंग्यार्थ प्रतीति को धारण करता है अत: व्यंग्य अर्थ उनके मत में वाच्य ही है। और विवक्षितार्थ बोधकराकर ही अभिधा विरत होती है न कि उससे पूर्व में। अत: कुछ के मत में व्यञ्जना स्वीकार्य नहीं है।

यहां समाधान है कि शब्द बुद्धि कर्मो का विराम करके व्यापार का अभाव होता है अर्थात् वाचक शब्द का सुकृत् शब्द बोध को उत्पादन करके पुनः अभिधा दूसरे अर्थ बोधन में असमर्थ होती है। भाव यह है कि संकेतितार्थ ही बोध कराकर अभिधा विरत है पुनः अर्थान्तर को प्रकाशित नहीं करती है।

तात्यर्यवृत्ति व्यंग्य बोधिका नहीं- दशरूपक के कर्ता धनिक के मत में व्यंजना का तात्पर्यवृत्ति में ही अन्तर्भाव होता है। तात्पर्यवृत्ति प्रतिपाद्य ही व्यंग्य है। निश्चय ही तात्पर्याख्या वृत्ति पदों के सम्बन्ध मात्र बोधन से उपक्षीण होती है। अतः वह कैसे व्यंग्यार्थो को बोध कराये, अथवा कैसे अतिरिक्त स्वरूप व्यंजना उसके अन्तर्गत होती है। यदि उनके द्वारा कहा जाय तात्पर्य हि यावत्कार्यप्रसारि होती है। अर्थात् धनिक के मत में तात्पर्यवृत्ति की सीमा निर्धारित नहीं है। अतः वह वृत्ति अधिक व्यंग्यादि का भी बोध करती है इसे मानना चाहिए। अतः व्यंजना स्वीकार नहीं करनी चाहिए। यदि यहां भी शब्द बुद्धि कर्म का विराम करके व्यापार का अभाव ही समाधान है। जैसा कि तात्पर्यवृत्ति वाक्यघटकपदों का संसर्गमात्र को पैदा करके सामर्थ्य नष्ट होती हुई व्यंग्यार्थ उत्पादन करने में समर्थ नहीं है।

यदि शब्द बुद्धि कर्मो का विराम करके व्यापार का अभाव है यह किसी राजाज्ञा के समान न्याय स्वीकार नहीं करते है। यह न्याय मीमांसक मत मात्र है। अतः यह अप्रमाणिक न्याय सभी द्वारा अभ्युपगन्तव्य नहीं है। यदि यहां कहा जाता है कि दीर्घ दीर्घतर अभिधा व्यापार से अभीष्ट अर्थ की सिद्धि संभव है तब लक्षणा स्वीकृत नहीं होती है। ब्राह्मण कन्या ते गर्भिणी इस वाक्य के श्रवण के बाद अविवाहित कन्या को पुत्रोत्पत्ति की वार्ता को सुनने से शोक होता है, पुत्रस्ते ज्ञातः इस वाक्य को सुनने से ब्राह्मण को हर्ष उत्पन्न होता है। इस प्रकार हर्ष शोकादि की प्रतीति हर्षशोकादिबोधक मुख्य प्रसादमालिन्यादि अनुमान से प्रतीत होते हैं। परन्तु अभिधा दीर्घ से दीर्घतर व्यापारात्यिका यह स्वीकार करने में हर्ष शोकादि भी वाच्यत्व को स्वीकार करनी चाहिए। परन्तु हर्ष शोकादि भावना के वाच्यत्व वाच्यत्व को किसी के द्वारा भी स्वीकृत नहीं है। इस प्रकार यह दीर्घ से दीर्घ अभिधा व्यापार न्याय स्वीकार नहीं है।

लक्षणा व्यंग्यार्थबोधिका नहीं - शब्द बुद्धि कर्मो के विराम करके व्यापार का अभाव है इस नियम से गंगायां घोषः में लक्षणा तटादि अर्थ मात्र को बोध कराकर विरत से होती है तो पुनः शीतलता पावनता आदि व्यंग्यार्थ बोधान में पुनः समर्थ नहीं होती। अतः व्यंजनात्मिका चतुर्थवृत्ति अवश्य स्वीकार करनी चाहिए।

22.9.2 व्यंजनावृत्ति का महत्त्व

व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ से सर्वथा भिन्न ही होता है। नीचे ध्वन्यालोकग्रन्थ में निरूपित कुछ श्लोक उदाहरण के रूप में उपस्थापित किये है-

टिप्पणी

1. कभी तो वाच्यार्थ में विधिरूप होने पर भी व्यंग्यार्थ प्रतिषेध रुप होता है।-

भ्रम धार्मिक विश्रब्धः स शुनकोऽद्य मारितस्तेन।
गोदानदीकच्छकुंजवासिना दृप्तसिंहेन॥

यह श्लोक हालकवि कृत गाथासप्तशती के द्वितीय शतक में है गोदावरी नदी का तट किसी पुंश्चली नायिका का संकेतस्थल है, जहाँ कि वह अपने प्रेमी से मिलने के लिए जाया करती है। उस स्थल की मनोरमता के कारण एक धार्मिक पण्डित वहाँ सन्धयोपसना या भ्रमण के लिए आने लगा और पुष्पादि तोड़ने लगा। इससे उस पुंश्चली नायिका के प्रेम मिलन में विघ्न उत्पन्न होने लगा और वह चाहने लगी कि वह धार्मिक यहां न आये। उस स्थान पर एक कुत्ता रहता था, जिससे वह धार्मिक दु:खी था अत: उस नायिका ने धार्मिक पुरुष से कहा-अब उस कुत्ते को गोदावरी नदी के किनारे कुंज में रहने वाले मदमत्त सिंह ने मार डाला है। अत: आप यहां निश्चित होकर भ्रमण करो। अब तक आप कुत्ते से डरते थे अब तो साक्षात् मदमत्त सिंह उपस्थित है। यदि अब भी भ्रमण करोगे तो मारे जाओगे अत: यहां मा भ्रम अर्थात् यहां भ्रमण मत करो यह व्यंजना है। वस्तुत: यहां अभिधा वृत्ति से भ्रम करो यह विधि बोध होता है परन्तु व्यंजना से मत भ्रमण करो यह निषेध व्यक्त होता है।

2. कहीं वाच्यार्थ के निषेधरूप होने पर व्यंग्य अर्थ विधि रूप होता है जैसे:-

श्वश्रूरत्र निमज्जति अत्राहं दिवसकं प्रलोकय।
मा पथिक रात्र्यन्ध शय्यायां मम निमक्ष्यसि॥

यह हालकवि कृत गाथासप्तशती के सप्तम शतक के 63वां पद्य है। पूर्व रात्रि में सुरत के लिए अपने भ्रमण से एक प्रगाढ शयनधरिणीश्वश्रू को आधार कर के अनर्थविधायी प्रेषित राय्यन्धत्व रुप से परिचायित स्वरूप उपपति के प्रति स्वयं दूती कुलटा की उक्ति है। यहाँ इस शय्या के पास श्वश्रूजरावस्था के कारण प्रगाढ़ निद्रा में सोती है अत: उससे किंचित शंका नहीं करनी चाहिए यह आशय है, और यहां पास में मैं सोती हूँ। यहां स्वापबोधकपद का प्रयोग न होने से कुलटा की काम पीड़ा निद्रा राहित्य को द्योतक है। हे प्रवासी पथिक मेरी शय्या पर मत गिर जाना। पास में परिवर्तन होने से इधर-उधर न लुढ़क जाना। यहां मेरी शय्या पर मत गिरना यह निषेध रूप वाच्यार्थ है परन्तु मेरी ही शय्या पर गिरना है यह विधि रूप व्यंग्यार्थ है।

3. कही पर व्यंग्यार्थ वाच्य अर्थ से भिन्न विषय में व्यवस्थित हो सकता है। जैसे-

कस्या वा न भवति रोषो दृञ्ट्वा प्रियायाः सव्रणमधरम्।
सभ्रमर पद्मध्राणशीले वारित वामे सहस्वेदानीम्॥

अपनी पत्नी का उपपति द्वारा दंशित अधर को देखकर रूष्ट हुए पति में निरपराध बोध के लिए प्रेरित करती हुए सखी की उक्ति है-अपनी प्रियतमा के व्रण सहित आधार को देखकर किस पति को क्रोध नहीं होता है। अपितु सभी में रोष होता है।

टिप्पणी

इससे इसका कोई दोष नहीं प्रकट नहीं होता है। अरे भ्रमर से युक्त कमल को सुंघने वाली और रोकने पर भी विपरीत आचरण करने वाली अब तू इसको सहन कर। वाच्यार्थ दुराचारिणी के प्रति है कि मैंने इस प्रकार की धृष्टता के लिए तुमको अनेक बार रोका परन्तु तुम नहीं मानी अब फल भोगो, व्यंग्यार्थ नायिका के पति के प्रति है कि तुम्हारी पत्नी का अधर भ्रमर द्वारा दंशित है, किसी पर पुरूष द्वारा नहीं। इस प्रकार वाच्य अर्थ नायिका और व्यंग्यार्थ का विषय पति है। इसलिए दोनों अर्थ भिन्न है।

इस प्रकार वाच्यार्थ से सर्वथा भिन्न व्यंग्यार्थ के प्रतिपादन के लिए व्यंजना नामक वृत्ति अवश्य स्वीकार करनी चाहिए।

पाठगत प्रश्न 22.4

29. व्यंजना का लक्षण लिखिए।

30. व्यंजना मूलतः कितने प्रकार की है?

31. शाब्दीमूला व्यंजना कितने प्रकार की है उनके नाम लिखिए?

32. लक्षणा व्यंग्यार्थ बोधिका है या नहीं है?

33. अभिधा व्यंग्यार्थ बोधिका या नहीं है?

22.10 तात्पर्यवृत्ति

आलंकारिकों के द्वारा मुख्यरूप से तीन ही वृत्तियां स्वीकार की गई है। परन्तु तात्पर्याख्या अन्य वृत्ति होती है ऐसा कुछ विद्वान् मानते हैं। साहित्यदर्पणकार पण्डित विश्वनाथ कविराज अन्य मत को मानते हैं। साहित्यदर्पणकार तात्पर्यवृत्ति को स्वीकार करते हुए क्या कहते है। यह इस प्रकरण में पढ़ेगे।

22.10.1 तात्पर्यवृत्ति का लक्षण

साहित्यदर्पण में अभिधा से प्राप्त अर्थ वाच्यार्थ कहा गया है। यहाँ कुछ संशय उपस्थित करते है- कि अभिधा से इस शब्द से यह अर्थ ज्ञात होता है परन्तु वाक्य में पद समूह से पदों का परस्पर अर्थ का बोध होने पर उन पदों के अन्वय से पूर्व वाक्यार्थ ज्ञान संभव नहीं होता। क्योंकि अभिधवृत्ति पद के अर्थ का प्रतिपादन करके विरत होती है। विरत होने पर पुनः कैसे कार्य होगा। शब्दबुद्धि कर्मो के विरम्य व्यापार अभाव न्याय से बिना रूके अभिधा से पुनः वाक्यार्थ बोध संभव है।

प्रश्न करते हैं कि पदार्थों का ज्ञान होने पर कैसे वाक्यार्थ प्रतीति होती है। तब कहते हैं कि तात्पर्याख्या वृत्ति ही पदार्थों के मध्य अन्वय सम्पादन से पूर्ण वाक्य सिद्ध होता है। इसलिए यह विलक्षण तात्पर्यवृत्ति स्वीकार्य है। तात्पर्यवृत्ति का लक्षण साहित्यदर्पण में कहा है –

तात्पर्याख्यां वृतिमाहुः पदार्थान्वयबोधने।
तात्पर्यर्थं तदर्थं च वाक्यं तद्बोधकं परे।

प्राचीन नैयायिक और भाट्टमीमांसक पदार्थों का अभिधा या लक्षणा द्वारा उपाथित अर्थों के अन्वय बोध होने पर परस्पर यथा संभव संबंध बोध होने पर तात्पयार्थ को तात्पर्याख्या वृत्ति कहा गया है। जैसे- 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधम्' इस उदाहरण में शरीर पर में स्थूलदेह अर्थ प्राप्त होता है, आद्यम् इस पद में प्रथमम् अर्थ प्राप्त होता है, खलु निश्चयार्थक अव्ययपद है, धर्मसाधनम् इस पद का अभिधा से धर्म की प्राप्ति के लिए उपाय यह अर्थ प्राप्त होता है। ऐसा होने पर अर्थ विवेक उत्पन्न नहीं होता। इसलिए यहां तात्पर्य वृत्ति से पदों का अन्वय से एक वाक्यार्थ आता है कि 'शरीरम् एवं धर्मस्य प्राप्तये प्रथमं उपायभूतम्' इस अर्थ की प्राप्ति होती है। इसलिए तात्पयार्थ वृत्ति स्वीकार है।

22.10.2 तात्पर्य वृत्ति को स्वीकार करने वाले सम्प्रदाय

इस वृत्ति को स्वीकार करने के प्रसंग में मीमांसको के मध्य में भी वैषम्य विद्यमान है। दो पक्ष सम्मुख आते है। 1 अन्विताभिधनवादी, 2 अभिहितान्वयवादी।

1 **अन्विताभिधानवाद**–अन्विताभिधानवाद या प्रभाकर गुरू कहते हैं कि जैसा कि इनकी नीति (न्याय में) तात्पर्य वृत्ति का प्रयोजन नहीं है। 'सोऽयमिषोरिव दीर्घदीर्घतरोऽमिधव्यापारः' इस न्याय से अभिधा का उतना कार्य प्रसारित होने उस अभिधावृत्ति द्वारा ही पदार्थ परस्पर अन्वित होकर अभिहित होते हैं। उसके द्वारा ही उन पदार्थों का अन्वय पूर्वक अर्थ प्रतीति में पुनः अन्वय बोध की अपेक्षा नहीं है। उनके मत में शुरू में क्रिया कारक आदि के मध्य में अन्वय बोध हो जाता है। उनके बाद पदविशेषण के साथ व्यवहार में विशेष स्मृति पैदा होती है। जैसा कि अन्वित घट में घट पद की शक्ति है। शब्द बोध में आकांक्षादि के कारण वृत्ति आदि विशेष रूप से आभासित होते हैं। अतः तात्पर्य वृत्ति की अपेक्षा नहीं है।

2 **अभिहितान्वयवादी** – भट्ट अभिहितान्वयवादी कहते हैं कि उनके न्याय में अभिधा से केवल पद का अर्थ प्राप्त होता है न कि पदार्थों के अन्वय बोध में अभिधा समर्थ है। उसका अर्थ प्रतिपादन के बाद विराम हो जाता है। इसलिए अन्वय बोध में तात्पर्य वृत्ति अपेक्षित है। अतः ये तात्पर्य वृत्ति स्वीकार करते हैं।

दर्पणकार का अभिमत – साहित्यदर्पणकार पण्डित विश्वनाथ कविराज भाट्ट अर्थात् अभिहितान्वयवाद के मत को स्वीकार करते हैं। उनके न्याय में पदार्थ बोध नाम क्रिया कारक आदि के मध्य में संबंध तो सत्य है। परन्तु केवल अन्वित में कहाँ से शक्ति

टिप्पणी

है। क्रिया कारक के मध्य में संबंध के समय में अन्वय होता है। वहाँ अन्वय संभव होने से अभिधा प्रवर्तित होती है। अभिधा वैसा अर्थ प्रतिपादन करके विरत होती है। पुनः अन्वय में प्रवर्तित नहीं होती है। तब तात्पर्य वृत्ति से ही वाक्यार्थ बोध होता है। इसलिए तात्पर्यावृत्ति स्वीकार की है।

पाठगत प्रश्न 22.5

34. साहित्यदर्पणस्थ तात्पर्यवृत्ति का लक्षण लिखिए?

35. तात्पर्यवृत्ति के प्रसंग में कहे गये दो पक्षों के नाम लिखिए?

36. दर्पणकार किस मत को स्वीकार करते हैं?

37. अन्विताभिधनवादी कौन हैं?

38. अभिहितान्वयवादी कौन है?

पाठसार

साहित्यशास्त्र मे वृत्ति अत्यन्त प्रसिद्ध विषय है। वृत्तियों के भेद के विषय में विद्वानों में मतभेद है। वे वृत्ति तीन या चार प्रकार की है। अभिधा लक्षणा व्यंजना और तात्पर्य शब्द जिस व्यापार या वृत्ति से लोक प्रसिद्ध अर्थ का बोध कराता है वह व्यापार वृत्ति अभिधा कहलाती है। आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश में अभिधा का लक्षण निरूपित किया है- स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधेच्यते। जैसे 'घटमानय' यह वाक्य सुनकर अभिधवृत्ति से घट शब्द का कम्बुग्रीवादिमान् पिण्ड है। क्योंकि इस घट शब्द से कम्बुग्रीवादिमान् पिण्ड इस अर्थ बोध में ईश्वरेच्छा है। इसी प्रकार आनय इसका भी अभिधवृत्ति से आनयन रूप क्रिया को बोध होता है। इस प्रकार मुख्यार्थ प्रतिपादिक वृत्ति की आलोचना के बाद लक्षणा वृत्ति कहते हैं। जब अभिधा से मुख्यार्थ के प्रतिपादित होने पर भी वाच्यार्थ का बोध नहीं होता तब यह लक्षणा वृत्ति प्रवृत होती है। वह मुख्यार्थ के साथ किसी सम्बन्ध से सम्बद्ध होकर भिन्न अर्थ को लक्षित करती है। वह लक्षणा 80 प्रकार की होती है उनमें से 16 षोडश प्रमुख भेद हैं। जिन्हें पण्डित विश्वनाथ कविराज ने साहित्यदर्पण में विस्तार से प्रतिपादित किया है। इस पाठ में उनके अनुसार ही लक्षणा के भेद प्रदर्शित किये हैं। साहित्यशास्त्र में व्यंजना सर्वाधिक प्रसिद्ध वृत्ति है। अभिधा लक्षणा और तात्पर्य ये तीन वृतियाँ जब अपने-अपने अर्थ को बोध कराकर क्षीण हो जाती है तब जिस वृत्ति से वाच्यलक्ष्यार्थ की अपेक्षा किसी अन्य अर्थ का बोध होता है वह व्यंजना वृत्ति है। यह व्यंजना शब्दनिष्ठ, अर्थनिष्ठ, प्रकृतिनिष्ठ, प्रत्ययनिष्ठ और निपातनिष्ठ आदि होती है। आलंकारिकों ने यद्यपि तीन ही वृत्तिया स्वीकार कि हैं फिर भी यह तात्पर्याख्या वृत्ति अवश्य स्वीकार करनी चाहिए यह विश्वनाथ का मत

है। उस का कारण है अभिधवृत्ति से पदों का अर्थ ज्ञात होता है। परन्तु केवल पदो के अर्थ ज्ञात होने से पूर्ण वाक्यार्थ का बोध नहीं होता। इसलिए पूर्ण वाक्यार्थ प्राप्ति के लिए जो वृत्ति अपेक्षित है वह तात्पर्याख्या है। प्रस्तुत पाठ में वृत्ति चतुष्टय की समालोचना निहित है।

आपने क्या सीखा

- वृत्ति के बारे में।
- वृत्तियों के लक्षण।
- शब्दबोध प्रक्रिया।
- अभिधा, लक्षणा व्यञ्जना वृत्तियों को जाना।
- तात्पर्यवृत्ति को जाना।

पाठान्त प्रश्न

1. अभिधवृत्ति के आधार पर लघु निबन्ध लिखिए।
2. वृत्ति को आधार बनाकर लघु प्रबन्ध लिखिए।
3. अभिधवृत्ति के लक्षण का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
4. वृत्तियों के भेद लिखिए।
5. संकेतग्रहण कैसे सम्भव होता है?
6. लक्षणा का वर्णन कीजिए।
7. रूढिमूला प्रयोजनवाली लक्षणा का प्रतिपादन कीजिए।
8. लक्षणा के 16 भेदो का वर्णन कीजिए।
9. उपादान लक्षणा के भेदों की उदाहरण के साथ व्याख्या कीजिए।
10. लक्षणलक्षणा के भेदों को उदाहरण के साथ लिखिए।
11. व्यंजनावृत्ति का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
12. आर्थी व्यंजना का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
13. शाब्दी व्यंजना का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
14. तात्पर्यवृत्ति का सोदाहरण परिचय दीजिए।

टिप्पणी

15. साहित्यदर्पणानुसार तात्पर्यवृत्ति को स्पष्ट कीजिए।
16. तात्पर्यवृत्ति की स्वीकृति में दो पक्षों का उल्लेख कीजिए।
17. साहित्यदर्पणकार के मत को स्पष्ट कीजिए।
18. तात्पर्यवृत्ति क्यों स्वीकार करे सप्रमाण वर्णन कीजिए।
19. अन्विताभिधनवाद का विस्तार से वर्णन कीजिए।
20. अभिहितान्वयवाद का विस्तार से वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

22.1

1. परार्थाभिधनवृति।
2. शक्ति।
3. चार भेद।
4. अभिधा लक्षणा व्यंजना और तात्पर्य।
5. अर्थबोध के प्रति अनुकूल कोई व्यापार है वह व्यापार ही वृत्ति है।
6. अभि उपसर्ग पूर्वक धा धातु से अड् प्रत्यय से अभिध शब्द निष्पन्न होता है।
7. 'स मुख्याऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्यामिधेच्यते''।
8. 'तत्र संकेतितार्थस्य वोधनात् अग्रिमाभिध''।
9. इस शब्द से यह अर्थ बोध होता है यह ईश्वरेच्छा संकेत है।
10. वाच्यार्थ।

22.2

11. मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययान्योऽर्थः प्रतीयते।
    रूढेः प्रयोजना द्वासौ लक्षणा शक्ति रर्पिता।।
12. मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोयऽथ प्रयोजनात्।
    अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपिता क्रिया।।
13. द्विविध।

14. मम्टाचार्य।

15. पण्डित विश्वनाथ कविराज।

16. शब्द के ऊपर।

17. मुख्यार्थ का।

18. लक्ष्यार्थ।

22.3

19. दो प्रकार–उपादान एवं लक्षण लक्षणा।

20. आठ प्रकार की।

21. श्वेतः धवति।

22. गौर्वाहीकः।

23. एतानि तैलानि हेमन्ते सुखानि।

24. कुन्ताः प्रविशन्ति।

25. राजा कण्टक शोधयति।

26. राजकुमाराः गच्छन्ति।

27. कलिंग साहसिकः।

28. आयुः पिबति।

22.4

29. विरतास्वभिधद्यासु ययाडर्यो बोध्यते परः।
    सा वृत्ति व्यंजना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च।।

30. दो प्रकार।

31. दो प्रकार–अभिधमूला और लक्षणामूला।

32. नहीं है।

33. नहीं है।

टिप्पणी

22.5

34. तात्पर्याख्यां वृत्तिमाहुः पदार्थान्वयबोधने

तात्पर्यार्थं तदर्थं च वाक्य तद्बोधकं परे।।

35. अभिहितान्वयवाद पक्ष, और अन्विताभिधनवाद पक्ष।

36. अभिहितान्वयवाद।

37. प्रभाकर।

38. भाट्ट।